Chapter- 3

ईश्वर जो करता है अच्छा ही करता है

STUDY NOTES

MIND MAP

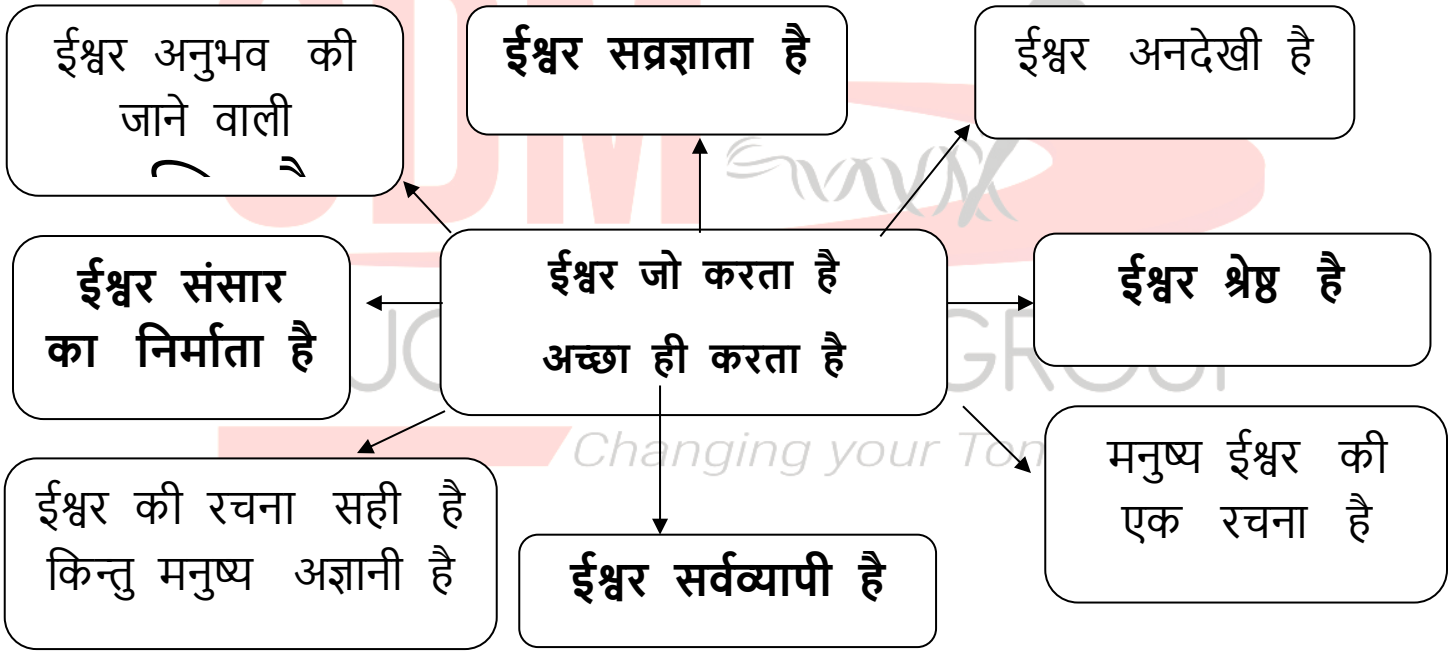

पाठ प्रवेश-

ईश्वर सर्वव्यापी और शक्तिमान हैं। उसके अस्तित्व को स्वीकार करने में ही भलाई है। परन्तु हम मनुष्य अपने अज्ञानता के कारण उनको समझने में असमर्थ होते हैं। इसलिए हम ईश्वर के रचना को दोष पुर्ण मानतेहैं।

'ईश्वर जो करता है, अच्छा ही करता है।' इस पाठ में दो मित्रों की दो विभिन्न विचारधाराओं को प्रतिपादित किया गया है। निखिल नास्तिक है। वह ईश्वर की हर रचना में कोई-न-कोई त्रुटि निकालकर अपने को ज्ञानी समझता है। उसे ईश्वर की हर रचना में कमी दिखाई देती है और अपने मित्र गौरव के विश्वास का मज़ाक उड़ाता है। उसका मित्र (गौरव) आस्तिक है वह ईश्वर पर पूर्ण विश्वास रखता है उसकी नज़र में ईश्वर की हर रचना में कोई भलाई अवश्य ही छिपी हुई है। वह अपने प्रभु पर विश्वास और सिद्धांत के पक्ष में अकस्मात् हुई घटना से निखिल की आँखों को खोल देता है जब आम के पेड़ के नीचे बैठे हुए विशाल पेड़ से आम गिरकर उसकी गंजी खोपड़ी पर गिरता है। वह दर्द से तड़प उठता है। यह घटना उसे सोचने के लिए मज़बूर करती है कि यदि आम की जगह तरबूज़ गिरता तो उसकी जीवन-लीला समाप्त हो सकती थी। अब उसे अपनी भूल और अज्ञानता का पता चलता है और वह कह उठता है कि 'ईश्वर जो करता है, अच्छा ही करता है' मैं मूर्ख हूँ जो इसकी रचना के महत्त्व को समझ नहीं पाया हूँ। उसकी रचना दोष रहित है।